

## बिहार का वार्षिक बाढ़ संकट

### चर्चा में क्यों?

बिहार को अपनी वशिष्ट भौगोलिक स्थिति और दशकों पुरानी बाढ़ नियंत्रण पद्धतियों के कारण प्रतिवर्ष वनिशकारी बाढ़ का सामना करना पड़ता है।

### मुख्य बिंदु

- **बिहार की बाढ़-प्रवण प्रकृति**
  - बिहार भारत का सबसे अधिक बाढ़ प्रभावित राज्य है, जहाँ उत्तर बिहार की 76% आबादी प्रभावित है।
  - यह क्षेत्र वर्षा और हिमपात से उत्पन्न नदियों से घिरा हुआ है, जिससे बाढ़ आने की संभावना अधिक रहती है।
  - बिहार नेपाल के नीचे स्थित है, और हिमालयी नदियाँ (कोसी, गंडक, बागमती) राज्य में बहती हैं।
  - इन नदियों में हिमालय की ढीली मृदा के कारण अत्यधिक मात्रा में तलछट होता है, जिसके कारण तीव्र वर्षा के दौरान ये उफान पर आ जाती हैं।
- **तटबंधों का प्रभाव:**
  - बाढ़ को नियंत्रित करने के लिये 1950 के दशक में कोसी जैसी नदियों पर तटबंध बनाए गए थे।
  - तटबंधों के कारण नदी के मार्ग संकीर्ण हो गए, जिससे तलछट जमा हो गया और नदी तल ऊँचा हो गया, जिससे नदियों के अतिप्रवाह की संभावना बढ़ गई।
  - कोसी, जिसे "बिहार का शोक" कहा जाता है, तटबंधों के बावजूद प्रतिवर्ष बाढ़ आती है।
- **हालिया बाढ़ (2024):**
  - अत्यधिक वर्षा और नेपाल द्वारा कोसी बैराज से जल छोड़े जाने के कारण उत्तर बिहार में भीषण बाढ़ आ गई।
  - विभिन्न जिलों में तटबंध टूट गए हैं, जिससे 11.84 लाख लोग प्रभावित हुए हैं।
  - बीरपुर बैराज से 6.6 लाख क्यूसेक जल छोड़ा गया, जो छह दशकों में सबसे अधिक है।
- **आर्थिक और सामाजिक प्रभाव:**
  - बाढ़ के परिणामस्वरूप फसल की हानि, पशुधन वनिश, बुनियादी ढाँचे को नुकसान, तथा मजबूरन पलायन होता है।
  - बिहार सरकार बाढ़ राहत और प्रबंधन पर प्रतिवर्ष 1,000 करोड़ रुपये व्यय करती है।
- **प्रस्तावित समाधान:**
  - संरचनात्मक: कोसी एवं अन्य नदियों पर बाँध एवं अतिरिक्त बैराज के प्रस्ताव।
  - गैर-संरचनात्मक: बाढ़ की चेतावनियों में सुधार, अतिरिक्त समय में सुधार, जन जागरूकता, तथा बाढ़ के प्रभावों को कम करने के लिये प्रशिक्षण।



PDF Refernece URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/bihar-s-annual-flood-crisis>

